परमहंस श्री हंसानंदजी सरस्वती दण्डीस्वामी जी

विषय तालिका

CD # 25 *SEP 2009 *

<< No.29 To 50 >>

SN	Title	Min	Coding			Contents	
1	Sep-No.29	45				गीता-५/८ आत्मा-दृष्टा अविनाशी अकर्म व अनात्मा-दृश्य विनाशी सकर्म,दो ही वस्तु हैं	1
2	Sep- No.30	45				गीता-५/८-१४ ब्रह्म-ईश्वर-जीव एकत्व निरू०, अकर्म आत्मा में सकर्म जगत आभास रूप है	2
3	Sep- No.31	37				ब्रह्म-माया ईश्वर-जीव और जगत का स्वरूप निरूपण, चिदाभास की ७ अवस्थाऐं	
4	Sep- No.32	33				गीता-२/६०-६४ ब्रह्म-माया-दो ही वस्तु हैं, स्थितप्रज्ञ के लक्षण	
5	Sep- No.33	53				गीता-५/८-६ श्रेय-नित्य एवं प्रेय-आभास सुख निरूपण आत्मा जल व जगत तरंग रूप है	3
6	Sep- No.34	43				ब्रह्म, ईश्वर, जीव, जगत का स्वरूप निरूपण, जहत, अजहत एवं भाग-त्याग लक्षणा, तत्-त्वम् पद का शोधन	
7	Sep- No.35	56				गीता-५/८-६ ब्रह्म सच्चि०अर्कम असंग अचल-माया असत जड़ दुःख चल है दृग-दृश्य विवेक V.Imp	4
8	Sep- No.36	27				ब्रह्म-माया का स्वरूप निरूपण स्वरूप ज्ञान ही मोह निद्रा से जागना है	
9	Sep- No.37	*52*				गीता-५/८-१४ आत्मा अकर्म है कर्म जगत में हैं प्रलय के ४ प्रकार सृष्टि में अजातवाद	5
10	Sep- No.38	28				गीता-२/७१-७२ संसार दुःखालय है, संसार कामना का त्याग व भगवत् भक्ति में ही सुख है	
11	Sep- No.39	55				देहाभिमान में मृत्यु है व स्वरूप ज्ञान से मोक्ष स०सा० व्यवहारी व नि०नि० अव्यवहारी है	
12	Sep- No.40	30				ब्रह्म-माया ईश्वर-जीव और जगत का स्वरूप निरूपण सद्य अथवा क्रम मुक्ति	
13	Sep- No.41	*67*				गीता-५/८-१४ ब्रह्म-ईश्वर-जीव एकत्व निरू० अकर्म आत्मा में सकर्म जगत आभास रूप है	6
14	Sep- No.42	30				गीता-२/७१-७२ तथा ३/१-१२ कर्मयोग-निष्कामकर्म की महिमा	A
15	Sep- No.43	44				ब्रह्म-माया : सत् असत् : दृग दृश्य : क्षेत्र क्षेत्रज्ञ बस दो ही पदार्थ हैं अहं ब्रह्मास्मि	
16	Sep- No.44	31				गीता-३/३ दो निष्ठाऐं : ज्ञानयोग व कर्मयोग-निद्रा की महिमा	B
17	Sep- No.45	43				गीता-५/१३-१५ देही विभु असंग मुक्त अकर्म दृष्टा साक्षी है सभी कर्म मायाकृत देह में हैं	7
18	Sep- No.46	36				गीता-३/१०-१५ दो निष्ठाऐं : ज्ञानयोग व कर्मयोग यज्ञ महिमा	C
19	Sep- No.47	*44*				गीता-५/१५-२६ ज्ञानी असंग मुक्त अकर्म समदर्शी तद्रूप होकर परम गति पाते हैं अ०५ इति Imp	8
20	Sep- No.48	32				गीता-३/१४-१७ यज्ञ महिमा ब्रह्म के पर्याय	D
21	Sep- No.49	45				गीता-५/२६ आत्म-स्थित योगी आत्मा को सब भूतों व भूतों को आत्मा में कल्पित देखता है	9
22	Sep- No.50	28				आत्मा-परमात्मा एकत्व मल विक्षेप आवरण रूपी माया का स्वरूप निरूपण	